

आरएसएस प्रमुख, मीडिया और विमर्श



यदि हम बारीकी से देखें, तो हम कई कम्युनिस्टों, शहरी नक्सलियों, धर्मांतरण तत्वों और मीडिया के बीच आरएसएस को असामाजिक, हिंदू समर्थक, हिंदू विरोधी, मुस्लिम विरोधी, महिला विरोधी व सिर्फ भारतीय संस्कृति के समर्थक के रूप में चित्रित करने के लिए एक दुसरे से प्रतियोगिता करते दिखते हैं। जब आरएसएस के सरसंघचालक किसी भी अवसर पर बोलते हैं, तो ये लोग जनता के बीच गुस्सा पैदा करने, जाति-आधारित विभाजित समाज के अपने विचार को मजबूत करने के लिए अपने एजेंडे के अनुरूप एक विशिष्ट वाक्य का उपयोग करके जोड़-तोड़ के माध्यम से एक झूठा विमर्श स्थापित करने की प्रतीक्षा कर रहे होते हैं। ताकि हिंदू कभी एकजुट न हों, और हमारे राष्ट्र की छवि खराब करने और आर्थिक क्षति पहुंचाने के लिए अंतरराष्ट्रीय मंचों पर एक झूठा धर्म-आधारित आख्यान तैयार करते हैं।

जब किसी व्यक्ती का स्वार्थी मकसद या लालची मानसिकता होती है, तो समाज और देश के लिए कभी भी सर्वोच्च प्राथमिकता नहीं होती है; वे किसी भी मार्ग से पैसा चाहते हैं और प्रसिद्धि चाहते हैं, भले ही इसका मतलब सामाजिक ताने-बाने और राष्ट्र को नुकसान पहुंचाना हो। ठीक यही वे आरएसएस और कई अन्य संगठनों के साथ कर रहे हैं जो राष्ट्र, दुनिया और पर्यावरण के कल्याण के लिए अथक प्रयास कर रहे हैं। लोकतंत्र के साथ देश को महान बनाने के लिए सर्वोत्तम संभव और तर्कसंगत तरीके से कार्य करने के लिए आलोचना, विस्तृत विश्लेषण, राय और सुझाव आवश्यक हैं; हालांकि, अगर एजेंडा विनाशकारी है और हमारे समाज और देश के दुश्मनों का समर्थन करने के लिए हैं तो नागरिकों को अधिक सतर्क और जागरूक होना चाहिए, और तथ्यात्मक और उपयुक्त सामग्री के साथ ऐसे झूठे आख्यानों का जवाब देना चाहिए।

जाति विभाजन आधारित सबसे ताजा उदाहरण है जब सरसंघचालक श्री मोहन भागवत ने एक पुस्तक विमोचन कार्यक्रम में सामाजिक समानता के महत्व के बारे में बात की। उन्होंने कहा कि सभी धर्मों के पूर्वजों ने गलतियां की हैं जिन्हें हमें सामाजिक सद्भाव हासिल करने के लिए सुधारना चाहिए। उन्होंने कभी किसी जाति विशेष का उल्लेख नहीं किया, लेकिन कुछ मीडिया संस्थानों ने तथ्यों को तोड़-मरोड़ कर पेश किया और एक जाति विशेष पर हमला करने के लिए सरसंघचालक के नाम का इस्तेमाल किया।

दुनिया के सबसे बड़े संगठन का नेतृत्व करने वाले और विभिन्न क्षेत्रों की सहायता के लिए कई संगठनों की स्थापना करने वाले संघटन के विरुद्ध गलत विमर्श गढ़ने के बजाय, तर्कसंगत और सकारात्मक बहस के लिए उनके भाषण का उपयोग करना बेहतर और उपयुक्त है ताकि सरकार और अन्य एजेंसियां इस मुद्दे से अवगत हों और सही दिशा में काम करें।

मीडिया को उनके भाषण से मुद्दों को उठाना चाहिए और डिबेट का आयोजन करना चाहिए, लेख छापने चाहिए और “राष्ट्र पहले” सिद्धांत पर केंद्रित जागरूकता पैदा करनी चाहिए।

2022 में विजयादशमी के भाषण के महत्वपूर्ण बिंदु

जनसंख्या नियंत्रण विधेयक

उन्होंने अपने विजयादशमी 2022 के भाषण में जिन चीजों का उल्लेख किया है उनमें से एक जनसंख्या नियंत्रण विधेयक है। क्या यह अध्ययन करना बेहतर नहीं है कि अतीत में क्या हुआ था जब जनसांख्यिकी बदल गई थी, न कि बुरे इरादों की तलाश करनी चाहिए? हमारे देश ने इतना क्षेत्र क्यों खो दिया है? मीडिया और बुद्धिजीवी नक्सलवाद के इस पहलू का अध्ययन कब करेंगे, जो केवल धर्मांतरण वाले क्षेत्रों में ही बढ़ता है?

हिंदू का अर्थ और हिंदुत्व का उद्देश्य

हमारी विरासत वह ताना-बाना है जो हमारे समाज को एक साथ बांधे रखता है, हमारे पूर्वजों की महिमा और हमारी मातृभूमि के प्रति हमारी शुद्ध भक्ति की प्रशंसा हमारे दिलों में प्यार की ज्वाला जगाता है। यह अर्थ “हिंदू” शब्द द्वारा व्यक्त किया गया है। हम सभी अपनी अंतर्निहित सनातन एकता की विशिष्टता को अपने गहनों के रूप में पहन सकते हैं और अपने पूरे देश का उत्थान कर सकते हैं यदि हम इन तीन तत्वों में लीन हैं। यह कुछ ऐसा है जो हमें करना चाहिए। यह राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का मिशन है।”

भारत की बदनामी

सरसंघचालक के अनुसार, ऐसी ताकतें हैं जो हिंदुओं को विभाजित करना चाहती हैं और देश में जाति और धर्म के आधार पर व्यवधान पैदा करना चाहती हैं।

“स्वाधीनता (स्व-शासन) से स्वतंत्रता तक का हमारा रास्ता खत्म नहीं हुआ है ... हमने जाति और धर्म के आधार पर आपस में लड़ना शुरू कर दिया। विभाजन का दर्द अभी कम नहीं हुआ है, लेकिन हमें विभाजन को दोहराना नहीं चाहिए।” भारत को बदनाम करने के लिए आंतरिक और बाहरी ताकतों द्वारा एक साजिश रची जा रही है,” उन्होंने कहा कि भारत में अराजकता पैदा करने के लिए तकनीक का इस्तेमाल किया जा रहा है।

आरएसएस और अल्पसंख्यक समुदाय

उन्होंने यह भी दावा किया कि आरएसएस को खतरनाक संघटन दिखाने के लिए देश के अल्पसंख्यक समुदायों को जानबूझकर गुमराह किया जा रहा है। केंद्र सरकार ने हाल ही में चरमपंथी आतंकवादी संगठन पॉपुलर फ्रंट ऑफ इंडिया (पीएफआई) पर प्रतिबंध लगा दिया, जिसका उद्देश्य 2047 तक भारत को एक इस्लामी गणराज्य में बदलना था, जिसका मकसद आरएसएस और भारत के अल्पसंख्यक समुदायों के बीच फूट पैदा करना है। पीएफआई के पास आरएसएस को “जातिवादी” संगठन के रूप में चित्रित करके और एससी/एसटी/ओबीसी समुदाय के साथ घनिष्ठ गठबंधन बनाने की रणनीति थी। इससे पीएफआई के लिए अपने लक्ष्य को हासिल करना आसान हो जाएगा। “कुछ लोग लोगों को यह विश्वास दिलाने के लिए डरा रहे हैं कि अल्पसंख्यक हमारी वजह से खतरे में हैं।” यह संघ या हिंदुओं का स्वभाव नहीं है। संघ ने भाईचारे, सौहार्द और शांति का समर्थन करने का संकल्प लिया है। मंदिर, पानी और श्मशान घाट तक सभी की एकसमान पहुंच होनी चाहिए।

महिला सशक्तिकरण

उन्होंने महिला सशक्तिकरण पर समान रूप से जोर देने के महत्व पर जोर दिया। “2017 में, विभिन्न संगठनों की महिला कार्यकर्ताओं ने भारतीय महिलाओं की स्थिति पर एक व्यापक सर्वेक्षण किया। सर्वेक्षण के निष्कर्षों ने प्रगति, सशक्तिकरण और समान भागीदारी के महत्व पर जोर दिया। परिवारों से शुरू होकर और संगठनात्मक जीवन के सभी स्तरों के माध्यम से आगे बढ़ना ; तभी समाज अपनी मातृ शक्ति के साथ राष्ट्रीय पुनरुत्थान में एक संगठित शक्ति के रूप में अपनी भूमिका को सफलतापूर्वक पूरा कर सकता है।”

उन्होंने ओटीटी प्लेटफॉर्म, बिटकॉइन और तालिबान के बारे में भी चिंता जताई। इन मुद्दों को मीडिया द्वारा भी गहराई से संबोधित किया जाना चाहिए क्योंकि वे हमारी संस्कृति, अर्थव्यवस्था और राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए खतरा हैं।

राष्ट्र निर्माण में मीडिया की भूमिका

फेक न्यूज बनाना सस्ता है, सच्ची पत्रकारिता महंगी है। पत्रकारिता का प्राथमिक कार्य जनहित में महत्वपूर्ण नई जानकारी की खोज करना और उस जानकारी को प्रासंगिक बनाना है ताकि हम इसका उपयोग मानव स्थिति में सुधार के लिए कर सकें। धोखाधड़ी और वित्तीय दुरुपयोग को रोकने के लिए न केवल मीडिया कंपनियों की एक नागरिक जिम्मेदारी है, बल्कि उनकी यह भी जिम्मेदारी है कि वे हमारी संस्कृति को भ्रष्ट या अपमानित न करें।

हमारे देश की प्रगति में बाधा डालने वाली सभी सामाजिक बुराइयों का मुकाबला करने के लिए मीडिया को एक हथियार के रूप में इस्तेमाल किया जा सकता है। यह सामूहिक एकता को बढ़ावा देने में बेहद फायदेमंद हो सकता है। मीडिया में गलत कामों और बुरी नीतियों के लिए सरकार की आलोचना करने और दबाव बनाने की क्षमता है। यह न केवल लोगों को सूचित, शिक्षित और मनोरंजन करता है, बल्कि यह जनमत को भी आकार देता है। यह मुख्य रूप से समग्र रूप से समाज की बेहतरी के लिए प्रयास करता है। हमारा राष्ट्र तब तक बाधित रहेगा जब तक कि मीडिया समाज और राष्ट्र के निर्माण में सक्रिय और सकारात्मक भूमिका नहीं निभाता, हालांकि वर्तमान स्थिति दयनीय है।

आम जनता को बनाए गए विभिन्न आख्यानो से सावधान रहना चाहिए ; बिना समझे और विश्लेषण के प्रत्येक विमर्श पर प्रतिक्रिया करना व्यवस्था, समाज और राष्ट्र को पंगु बना देता है। प्रत्येक विमर्श का आदर्श वाक्य होना चाहिए “एकता और राष्ट्र प्रथम।”

(लेखक राष्ट्रवादी विचारों पर शोधपूर्ण लेख लिखते हैं और इनकी कई पुस्तकें भी प्रकाशित हो चुकी हैं)

संपर्क

पंकज जगन्नाथ जयस्वाल

7875212161